वैम्पायर का कंकाल मिला

वेनिस में एक कब्र की खुदाई करने पर एक कंकाल मिला है जिसके बारे में कहा जा रहा है कि वह एक वैम्पायर का है। वैम्पायर युरोप में बहुत प्रसिद्ध रहे हैं और उनके बारे में कहा जाता था कि वे इंसानों का खून पीते थे।

मध्य युग में जब युरोप में प्लेग फैला था तो हज़ारों लोग मारे गए थे। कई जगहों पर इन्हें सामूहिक रूप से दफनाया गया था। इटली के फ्लोरेंस विश्वविद्यालय के मैटियो बोरिनी वेनिस में लैज़रेटो नुओवो द्वीप पर ऐसी ही सामूहिक कब्र खोद रहे थे। यहां से उन्हें एक महिला का कंकाल मिला जिसके मुंह में एक ईंट फंसी हुई है। यह ईंट फंसा कंकाल एक दंतकथा का प्रमाण पेश करता है।

जिस समय इस महिला की मृत्यु हुई थी, उस समय कई लोग मानते थे कि प्लेग वैम्पायरों द्वारा फैलाई जाने वाली बीमारी है। ये वैम्पायर लोगों का खून पीने की बजाय मरने के बाद अपने कफन को चबाते हैं और बीमारी को फैलाते हैं। प्रचलित मान्यता के चलते कब्र तैयार करने वाले ऐसे संदिग्ध वैम्पायरों के मुंह में एक ईंट फंसा देते थे ताकि वे कफन न चबा सकें। ।

वैम्पायरों के बारे में इस मान्यता का आधार शायद यह था कि कभी-कभी शव के मुंह से खून टपकता है जिसकी वजह से कफन अंदर की ओर धंस जाता है और फट जाता है। इस सम्बंध में बोरिनी ने अपना शोध पत्र अमेरिकन एकेडमी ऑफ फॉरेंसिक साइंस की एक बैठक में प्रस्तुत करते हुए बताया कि संभवतः यह पहला 'वैम्पायर' है जिसकी अपराध वैज्ञानिक जांच हुई है। यह कंकाल वेनिस में 1576 में फैले प्लेग के मृतकों की एक कब्र में से निकाला गया है।

बोरिनी का दावा है कि यह खोज उस समय प्रचलित मान्यता का एक पुरातात्विक प्रमाण है। अलबत्ता, कुछ अन्य वैज्ञानिकों का मत है कि यह खोज रोमांचक ज़रूर है मगर इसे प्रथम वैम्पायर कहना थोड़ी ज़्यादती है। ***(स्रोत फीचर्स)***